प्रबोधन I

वस्तुनिष्ठ

सर्वाधिक सही उत्तर पर ✓ का चिह्न लगाओ

पृ.सं.

1. "मैं व्यवहार में सत्य व प्रामाणिकता की साधना करूंगा'-अणुव्रत आचार-संहिता के इस बिंदु का संबंध है — 54
अ. विद्यार्थी से ✓ ब. अध्यापक से
स. व्यापारी से द. राज्य कर्मचारी से

2. इस युग की सांस्कृतिक समस्याओं में शामिल है — 100
अ. मिलावट ✓ ब. सेवा भावना की कमी
स. रिश्वत द. दहेज

3. शांति यदि जीवन का सर्वोपरि साध्य है तो उसका सर्वोपरि साधन है — 15
अ. मैत्री ब. शक्ति
स. भय-मुक्ति ✓ द. सत्ता

4. 'और किसी पद की आकांक्षा मेरे मन में नहीं है, पर कोई अणुव्रती या अणुव्रत-समर्थक का पद देना चाहे तो उसके लिए मैं तैयार हूं।'-यह मनोकामना व्यक्त की — 61
अ. पं. नेहरू ने ब. महात्मा गांधी ने
स. काका कालेलकर ने ✓ द. राजेन्द्र बाबू ने

5. राजर्षि भर्तृहरि के अनुसार अपने स्वार्थ को गौण कर परहित का संपादन करने वाले होते हैं — 167
अ. अनाम पुरुष ब. महापुरुष
स. सत्पुरुष ✓ द. साधारण पुरुष

6. जैन आगमों के संपादन का कार्य विधिवत प्रारंभ किया गया — 45
अ. लाडनूं में ब. औरंगाबाद में
स. उज्जैन में ✓ द. दिल्ली में

7. एक गुजराती कहावत के अनुसार धर्म तीन प्रकार से होता है, उनमें शामिल नहीं है— 85
अ. लाजै ब. खाजै
स. बाजै ✓ द. दाझै

8. व्यक्ति के जीवन में अकल्पित क्रांति ला सकने वाले अणुव्रत के त्रिसूत्री कार्यक्रम में शामिल सूत्र हैं— 66 67
अ. सम्यक् दर्शन ब. सम्यक् आचरण
स. उपर्युक्त दोनों ✓ द. सम्यक् प्रचार

9. महाराज इषुकार के मन में वैराग्य जगाने वाले बोल थे— 95 94
अ. महारानी कमलावती के ✓ ब. यशा के
स. भृगु के द. भृगुपुत्र के

पृ.सं.

10. अस्तित्व सुरक्षा के लिए होने वाली हिंसा कहलाती है— 77

अ. संकल्पजा ✓ब. विरोधजा
स. आरंभजा द. उपर्युक्त तीनों

11. आचार्य तुलसी के अनुसार व्यक्ति की नैतिकता को डांवाडोल करने वाला सबसे बड़ा कारण है— 142

✓अ. नैतिक आस्था का अभाव ब. मानसिक दुर्बलता
स. नैतिक वातावरण का अभाव द. अंतहीन स्पर्धा

12. धर्म के क्रियाकांडी रूप को बदलने के लिए अणुव्रत ने धर्मक्रांति के सूत्र दिए— 69

✓अ. 5 ब. 7
स. 11 द. 84

13. अणुव्रत की दृष्टि से धर्म है — 123

अ. आत्म-रमण ब. चरित्र का विकास
✓स. उपर्युक्त दोनों द. उपासना

14. अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन फाल्गुनी शुक्ला द्वितीया को हुआ — 12

✓अ. सरदारशहर में ब. दिल्ली में
स. छापर में द. गंगाशहर में

15. आचार्य तुलसी की दृष्टि में आर्थिक विषमता और सामाजिक अन्याय का मूल हेतु है— 52

अ. गरीबी ब. नशा
स. साम्प्रदायिकता ✓द. अनैतिकता

16. अणुव्रत का प्रथम अधिवेशन रखा गया — 75

अ. लाल किले में ✓ब. चांदनी चौक में
स. प्रगति मैदान में द. राष्ट्रपति भवन में

17. द्वितीय महायुद्ध के बाद 'अशांत विश्व को शांति का संदेश' दिया 41

अ. महात्मा गांधी ने ✓ब. आचार्य तुलसी ने
स. उपर्युक्त दोनों ने द. पंडित सुखलाल जी ने

18. अणुव्रत का काम करने की दृष्टि से चलाए गए — 'शिक्षा के क्षेत्र में त्रिकोणात्मक अभियान' के कार्यक्षेत्र में शामिल बिंदु हैं— 57

अ. विद्यार्थी ब. अध्यापक
स. अभिभावक ✓द. उपर्युक्त तीनों

19. 'हर नई चीज को चार स्टेजों से गुजरना पड़ता है-उपहास, आलोचना या निंदा, जिज्ञासा और प्रशंसा या स्वीकृति।' - यह कथन है — 27

अ. आचार्य तुलसी का ब. महात्मा गांधी का
✓स. श्री सत्यदेव विद्यालंकार का द. डॉ. सतकौड़ी मुखर्जी का

20. मनुष्य की उच्चता का मानदंड है — 187

अ. शिक्षा ब. धर्म
✓स. आचरण द. उपर्युक्त सभी

प्रबोधन II

सही-गलत चयन

सही कथन के सामने (✓) व गलत कथन के सामने (✗) का चिह्न लगाएं -

	कथन	चिह्न	पृ.सं.
1.	सभी वर्ग और व्यक्ति समन्वय का सूत्र अपना लें तो पारस्परिक आग्रह-विग्रह स्वयं अशांत हो जाएगा।	✗	47
2.	शांत मन को समाधान देने के लिए जो प्रक्रिया है, वही धर्म है।	✗	62
3.	कोई भी समझदार आदमी तात्कालिक परिणाम के लिए दीर्घकालिक परिणाम की उपेक्षा नहीं कर सकता।	✓	88
4.	प्रदत्त पद और उपाधियाँ अस्थाई होती हैं।	✓	225
5.	सामाजिक जीवन और शिक्षा-जगत में भी संयम उपेक्षित हो रहा है।	✓	73
6.	अनैतिकता का वियोग धर्म की मूर्च्छावस्था का प्रतीक है।	✗	19
7.	स्वावलंबन आदि जीवन-तत्त्व अर्थ-संग्रह वृत्ति को उत्तेजित करते हैं।	✗	129
8.	किसी भी युग की सबसे बड़ी त्रासदी है — जीवन-मूल्यों की अपेक्षा।	✗	210
9.	वास्तव में धर्म तो असांप्रदायिक ही होता है।	✓	94
10.	अणुव्रत की अवधारणा के अनुसार संप्रदाय बुरे नहीं होते।	✓	123
11.	अनैतिकता की समस्या समाज की अस्थाई समस्या है।	✗	132
12.	धर्म और संप्रदाय एक हैं।	✗	119
13.	जहां अनैतिकता है, वहां भय है, संत्रास है, निश्चय है और तनाव है।	✗	149
14.	युगधर्म वह होता है, जिस पर व्यक्ति या संप्रदाय का लेबल न हो।	✓	170
15.	मनुष्य के मन में अनैतिक जीवन के प्रति सहज आकर्षण होता है।	✗	211

प्रबोधन III

रिक्त स्थान पूर्ति

रिक्त स्थानों की पूर्ति उपयुक्त शब्द या शब्द-समूह से कीजिए -

		पृ.सं.
1.	परिग्रह के अल्पीकरण की बात......शाश्वत......सत्य के रूप में मान्य है।	81
2.	किसी अच्छे काम के लिए साथी की......प्रतीक्षा......करना समय को खोना है।	91
3.	अणुव्रतों का......असांप्रदायिक......रूप प्रारंभ से रहा है।	129
4.	अणुव्रत आचार-संहिता की एक-एक......धारा......को गहराई से समझकर जीवनगत करने का प्रयत्न करें।	151
5.	किसी भी प्रवृत्ति को पोषण देने के लिए उसके......विचारपक्ष......को पुष्ट करना अपेक्षित हो जाता है।	30
6.	व्रतों के पालन से जीवन की......शैली......बदलती है।	71
7.	अवरोध......गतिशीलता......के प्रतीक हैं।	36
8.	मनुष्य आत्मा एवं......परमात्मा......से साक्षात्कार करना चाहता है।	158
9.	दमित वासनाएं अनुकूल परिस्थिति पाते ही पुनः अपने......अस्तित्व......को सुदृढ़ बना लेती है।	230
10.	......युग......कोरा वर्तमान नहीं है।	52
11.	नैतिक......विकास......का प्रयत्न भी साधना है।	130

	पृ.सं.
12. उपासना कभी-कभी की जाती है और............चरित्र............हर क्षण जीया जाता है।	40
13. जनता का मानस बदले बिना किसी परिवर्तन की............संभावना............नहीं की जा सकती।	133
14. अणुव्रत भाईचारे की............बुनियाद............पर खड़ा है।	204
15. ....राजनीति............का लक्ष्य है देश या राज्य में व्यवस्था बनाए रखना।	107
16. आचरण की ऋजुता का अभ्यास आस्थाहीनता का एकमात्र............प्रतिकार............है।	84
17. ....पदार्थवादी............दृष्टिकोण ने धन संग्रह की अमित प्यास जगाई।	115
18. स्वतंत्र विचारों की............परिधि............में भिन्नता भी स्वाभाविक है।	78
19. चरित्र जीवन का............मौलिक............गुण है।	39
20. ....भारत............धर्म का मुख्य उद्‌गम स्रोत रहा है।	12
21. ....व्रत............ हृदय-परिवर्तन का फल है।	10
22. त्याग और भोग की............दिशाएं............ सर्वथा भिन्न हैं।	177
23. संयम की सीख............आत्मानुशासन............ के धरातल पर ही फलित हो पाती है।	71
24. ....अणुव्रत............ के प्रति हर देश के लोगों में श्रद्धा है।	183
25. संस्कार-निर्माण के क्षेत्र में ....शिक्षक............ जितना काम कर सकते हैं, उतना अन्य लोग नहीं कर सकते।	90

प्रबोधन IV

मात्रा लगाओ

समुचित मात्राएं लगाकर नियत स्थान पर वाक्यों को पुन: लिखिए।

पृ.सं.

1. मनवय एकत मं वश्वस रखन वल व्यक्त ह अणव्रत बन सकत है।
   मानवीय एकता में विश्वास रखने वाला व्यक्ति ही अणुव्रती बन सकता है। — 120

2. कइ बदल य नहं, मझ बदलन ह- यह वश्वस ह व्यक्त क बदलव मं ढलत ह।
   कोई बदले या नहीं, मुझे बदलना है - यह विश्वास ही व्यक्ति को बदलाव में ढ़ालता है। — 91

3. अणव्रत परग्रह क अल्पकरण क सद्धंत क दढ वश्वस क सथ जन-जन तक पहंचन चहत ह।
   अणुव्रत परिग्रह के अल्पीकरण के सिद्धांत को दृढ़ विश्वास के साथ
   जन-जन तक पहुँचाना चाहता है। — 82

4. भरतय मनस व्रत स बहत प्रभवत ह।
   भारतीय मानस व्रत से बहुत प्रभावित है। — 17

5. अणव्रत क पंख अर प्रक्ष क अख पकर ह व्यक्त अपन संकल्प क अकश म उड़न भर पएग।
   अणुव्रत की पांख और प्रेक्षा की आंख पाकर ही व्यक्ति अपने संकल्पों के आकाश
   में उड़ान भर पाएगा। — 101

6. नइ अचर-संहत शब्द क अपक्ष ववक-जगरण पर अधरत ह।
   नई आचार-संहिता शब्दों की अपेक्षा विवेक-जागरण पर आधारित है। — 131

7. अचर-संहत क प्रत्यक धर अत्मलचन क प्रशस्त पृष्ठभम ह।
   आचार-संहिता की प्रत्येक धारा आत्मलोचन की प्रशस्त पृष्ठभूमि है। — 148

8. वज्ञनक यग न सबस अधक कस क उपक्ष क ह त वह ह संयम।
   वैज्ञानिक युग ने सबसे अधिक किसी की उपेक्षा की है तो वह है संयम। — 115

9. अणव्रत न परग्रह क एक नश्चत समकरण क अपक्ष अर्जन क स्रत क शद्ध पर अधक बल दय ह।
   अणुव्रत ने परिग्रह के एक निश्चित सीमाकरण की अपेक्षा अर्जन के स्रोतों की शुद्धि
   पर अधिक बल दिया है। — 81

पृ.सं.

10. धमअरजनतदअलग-अलगध्रवहं।

धर्म और राजनीति दो अलग-अलग ध्रुव हैं। 108

11. धर्मकसधर्मग्रंथयधर्मस्थनमबंदनहंहसकत।

धर्म किसी धर्मग्रंथ या धर्मस्थान में बंदी नहीं हो सकता। 202

12. धर्मकमलकतजवन-परवर्तनकप्रक्रयमंह।

धर्म की मौलिकता जीवन-परिवर्तन की प्रक्रिया में है। 40

13. जवनकनयअर्थदनकलएअहंकतड़नअवश्यकहतह।

जीवन को नया अर्थ देने के लिए अहं को तोड़ना आवश्यक होता है। 234

14. भरतयसंस्कृतकअण-अणमंनतकसंस्करंकगंजह।

भारतीय संस्कृति के अणु-अणु में नैतिक संस्कारों की गूंज है। 183

15. भरतयसंस्कृतधर्मप्रधनसंस्कृतह।

भारतीय संस्कृति धर्मप्रधान संस्कृति है। 111

16. अणव्रतककर्यक्रमअध्यत्मकयधर्मकहतहएभकसकर्मकंडयपरंपरसजकड़हअनहंह।

अणुव्रत का कार्यक्रम आध्यात्मिक या धार्मिक होते हुये भी किसी कर्मकांड

या परंपरा से जकड़ा हुआ नहीं है। 130

17. मनकशद्धव्यक्तकवक्रतकपथपरझंकननहंदत।

मन की शुद्धि व्यक्ति को वक्रता के पथ पर झांकने ही नहीं देती। 212

18. गतमंदहयतव्र,अवरधअनसकमनहंहसकत।

गति मंद हो या तीव्र, अवरोध आने से काम नहीं हो सकता। 33

19. भरतयपरंपरमंमहनवहहजत्यगह।

भारतीय परंपरा में महान वह है जो त्यागी है। 8

20. संयमहजवनह।

संयम ही जीवन है। 116

प्रबोधन V

वर्ण 'त' पर समाप्त

प्रत्येक प्रश्न के उत्तर का अंतिम वर्ण 'त' होना अनिवार्य है।

		पृ.सं.
1.	साधना का भाव जितना......विकसित......होता है, आवेश उतना ही कम हो जाता है।	46
2.	जीवन के......ज्ञात......संबंध बहुत कम हैं।	62
3.	धर्म के......सिद्धांत......बहुत ऊँचे हैं।	103
4.	भारतीय लोक जीवन में कानून और दंड से भी ऊपर कोई तत्त्व है तो वह......व्रत......है।	70
5.	व्यवहार को......परिष्कृत......करने की कसौटी है–अणुव्रत आचार-संहिता।	127
6.	अप्रामाणिक समाज कभी......उन्नत......नहीं हो सकता।	53
7.	मनुष्य सही अर्थ में मनुष्य बनकर जीए, यह अणुव्रत का......फलित......है।	99
8.	व्यक्ति की आचार-निष्ठा और नैतिकता का......जीवंत......साक्ष्य होता है उसका अपना मन और व्यवहार।	67
9.	अणुव्रत का यह सौभाग्य है कि वह एक दृष्टि से......सर्वसम्मत......आंदोलन के रूप में प्रसिद्ध है।	141
10.	संपदा मूलतः......अस्वामित......होती है।	80
11.	सुदृढ़ आस्था के अभाव में वृत्तियाँ और व्यवहार दोनों ही......प्रशस्त......नहीं हो सकते।	161
12.	मानवीय मूल्यों को......आत्मगत......करना ही अणुव्रत का लक्ष्य है।	125
13.	......जगत......प्रकाशमय है।	237
14.	अणुयुग स्थूल से सूक्ष्म की ओर जाने का......संकेत......है।	96
15.	धार्मिक का व्यवहार नैतिक न हो, यह बहुत आश्चर्य की......बात......है।	86

प्रबोधन VI

वर्ण 'म' से प्रारंभ

प्रत्येक प्रश्न के उत्तर का पहला वर्ण 'म' होना अनिवार्य है।

		पृ.सं.
1.	मंजिल बहुत दूर होती है, तो ....मध्यावधि.... विश्राम भी आवश्यक हो जाते हैं।	220
2.	स्वार्थपरता ....मनुष्य.... की सहज वृत्ति है।	246
3.	थोड़े से लाभ के लिए अधिक ....मत.... खोओ।	154
4.	'....महाराज....! मुझे आप यह उपाधि दे दीजिए कि मैं एक सच्चा मानव बनूं।'	225
5.	अणुव्रत दर्शन को समझे बिना अणुव्रती बनना बिना बुनियाद ....मकान.... खड़ा करने के समान है।	192
6.	धर्म न कभी ....मरता.... है और न कभी जनमता है।	107
7.	'नया मोड़' का व्यापक कार्यक्रम अणुव्रत के ....महत्त्वपूर्ण.... पक्ष का संवाहक है।	60
8.	शांति का अर्थ है–जीवन के ....महान.... साध्य की सिद्धि।	16
9.	मनुष्य की भोगवाद और सुविधावादी ....मनोभूमि.... सुख-शांति की फसल उगा सके, यह असंभव है।	176
10.	अणु और ....महा.... – इन दो विशेषणों से संवलित होकर व्रत सबके लिए उपभोग्य बन जाता है।	220
11.	ताको कोउ खोलै तामे ....मनाही.... पुकार दी।	48
12.	....महाहिंसा.... की आग में झुलसी हुई चेतना किसी भी समाज के हित में हो, यह कभी संभव नहीं है।	79
13.	....मर्कटस्य.... सुरापानं तत्र वृश्चिकदंशनम्।	143
14.	....महापरिग्रह.... का अर्थ ही है केंद्रित अर्थ-व्यवस्था।	80
15.	....मन.... विकल्प को जन्म देता है।	62

प्रबोधन VII

वर्ग पहेली

अग्रांकित कोष्ठकों में प्रदर्शित वर्णों को ऊपर से नीचे या बांयें से दांये जोड़ते हुए प्रश्नों के उत्तर नियत खानों पर लिखिए (खानों में लिखे गए उत्तर ही मान्य होंगे) —

1 वि	चा	2 र	धा	3 रा		4 म	हा	वी	र
रा		ह		ह		ज			
स		ट		त		ह			5 प
त						6 ब	रा	ब	र
	7 स	मा	ज	वा	8 द				म
9 स	म				10 म	सि		11 चा	
	12 य	13 दा		14 म	न		15 च	रि	त्र
16 अ		न				17 म		त्रि	
18 स	दा		19 द	स	वै	का	लि	क	
र		20 ब	ल			न			21 स्व

ऊपर से नीचे —

	पृ.सं.
1. एकल परिवारों में संस्कार, संस्कृति और परंपराओं की..............................छिन्न-भिन्न हो रही है। (4)	162
2. पानी पीने के लिए..............................की आवाज को सुनना जरूरी होता है, इसी प्रकार जीवन को ऊंचा उठाने के लिए कुछ संघर्षों का मुकाबला करना भी आवश्यक है। (3)	117
3. अणुव्रत की शरण में आकर अनेक लोगों ने..............................का अनुभव किया है। (3)	124
4. धर्म पर किसी जाति, प्रांत, वर्ग या........................का आधिपत्य नहीं होना चाहिए। (4)	119
5. महाव्रत..............................आदर्श है। (3)	220
7. धर्म के लिए अतिरिक्त................................की आवश्यकता नहीं है। (3)	125
8. ....और विलयन में बुराई से मुक्ति नहीं मिलती। (3)	230
11. अणुव्रती बनने की कसौटी है – ....उदात्तता। (4)	223
13. संयम की वृद्धि करने वाला..........................निरवद्य होता है। (2)	50
16. सुधरे व्यक्ति, समाज व्यक्ति से, उसका........................राष्ट्र पर हो।(3)	143
17. शरीर की अपेक्षाओं में से एक–....................................(3)	62
19. इस युग की राजनैतिक समस्याओं में से एक ('बदल' को छोड़कर)–..............................(2)	100

बायें से दायें –

पृ.सं.

1. जाति, संप्रदाय, देश, भाषा, वेशभूषा आदि से अप्रतिबद्ध एक जाग्रत........................का नाम है अणुव्रत।(5) 157

4. भगवान................................अध्यात्म के सशक्त प्रवक्ता थे।(4) 161

6. झगड़ लिया सो खून.............................., आ संतां री बानी (4) 139

7. ....नैतिक सिद्धांतों का मूर्त रूप है।(5) 53

9. सामूहिक कार्यक्रमों में................................और विषम आसन पर बैठने का आग्रह भी समन्वय के मार्ग में बाधा है। (2) 42

10. भगवान ऋषभ जब राजा थे तब उन्होंने प्रजा हित के लिए असि,.............................और कृषि का प्रवर्तन किया। (2) 89

12. मोक्ष-साधना लक्ष्य..............................है, आत्मशुद्धि की बहती धारा,
अमर रहेगा धर्म हमारा।। (2) 107

14. मनुष्य के असंतुलित................................से बुराइयां जन्म लेती हैं। (2) 164

15. मनुष्य को बांटने की मनोवृत्ति राष्ट्रीय.............................की एक प्रमुख समस्या है। (3) 203

18. शक्ति और सत्ता में..............................प्रतिस्पर्धा रहती है। (2) 15

19. ....का कार्य वास्तव में तटस्थ दृष्टि से हुआ है। (6) 46

20. आस्था का..................................ही व्यक्ति को संकट से उबार सकता है। (2) 211

21. ....और पर की दूरी जितनी कम होती है, उतनी ही अनैतिकता कम हो जाती है। (1) 132

प्रबोधन VIII

अणुव्रत चक्रम

प्रत्येक उत्तर का प्रथम वर्ण 'अ' केंद्र में अंकित है, शेष तीन वर्ण चक्रम के नियत खानों में लिखकर उत्तर पूरा कीजिए। आपकी सहायता के लिए दिए गए उदाहरण का अवलोकन अवश्य करें।

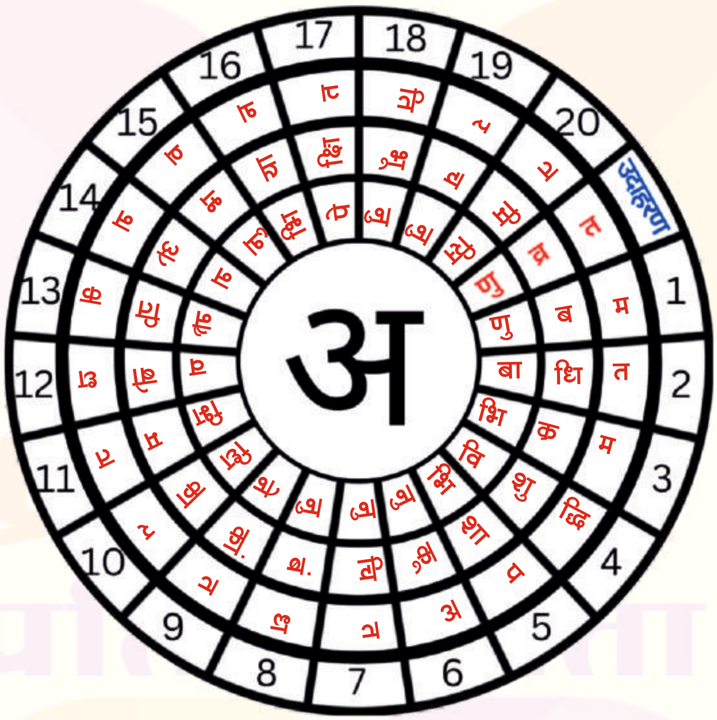

		पृ.सं.
उदाहरण	:...............................जीवन का विज्ञान है।	150
1.	....नहीं, अणुव्रत चाहिए।	180
2.	अणुव्रत की मूल्यवत्ता देश और काल से..............................है।	141
3.	अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह का.........................अणुव्रत-कार्य को वेग देने के लिए ही है।	164
4.	मन की..................................व्यक्ति के सामने अप्रामाणिकता के नए-नए द्वार खोल देती है।	212
5.	प्रमाद विकास के लिए.............................है।	234

		पृ.सं.
6.	संस्कार-निर्माण की दृष्टि से विद्यार्थी बहुत.......................भूमि है।	57
7.	सत्ता पाने के लिए............................तरीकों से अर्थ का संग्रह और उपयोग होता रहता है।	203
8.	अणुव्रत एक ऐसा आंदोलन, जो न राजनीति से प्रेरित है और न धार्मिक आस्थाओं के साथ इसका कोई................है।	191
9.	......................दृष्टिकोण को सम्यक् बनाता है और विधायक भावों का विकास करता है।	236
10.	धार्मिक और नैतिक उपदेश सुनने का.........................मानव मात्र को है।	188
11.	एक.........................के अनुसार सज्जन वह होता है, जो समाज में सेवा और सहयोग के लिए सदा तत्पर रहता है।	126
12.	अणुव्रत आंदोलन हर व्यक्ति को वस्तुस्थिति का...........................देकर व्रतों की भूमिका पर खड़ा करना चाहता है।	230
13.	अणुव्रती कार्यकर्ता.............................शक्तियों और प्रवृत्तियों का प्रतिकार करने के लिए प्रतिरोधात्मक नैतिक शक्तियों का विकास कर उनका प्रयोग करें।	193
14.	ज्ञातिश्चेत..........................किम्?	147
15.	समस्या-संकुलता का............................शुभ और अशुभ दोनों दृष्टियों से अनुबंधित है।	56
16.	व्यक्तिगत जीवन की पवित्रता के लिए अणुव्रत ने व्यसन-मुक्ति का..........................चलाया।	121
17.	जहां शरीर और मन है, वहां प्रवृत्तियां भी................................हैं।	62
18.	अनैतिक व्यवहार भेद की...................................में ही होता है।	132
19.	अणुव्रत किसी का..........................नहीं है।	245
20.	..................................लालसाओं, आर्थिक प्रतिस्पर्द्धाओं और अविचारित भागदौड़ ने मनुष्य का सुख-चैन छीन लिया है।	165

प्रबोधन IX

कौन हूं मैं ?

मुझे पहचान कर मेरा नाम निर्धारित बॉक्स में लिखिए –

1. मेरे अभाव में व्रत का स्वीकरण और आचरण दोनों ही कठिन हो जाते हैं –
2. ज्ञान की ऊंची भूमिका पर पहुंचने के बाद मैं अर्थहीन हो जाता हूं –
3. मैं जीवन के लिए प्राण हूँ –
4. मैं भी किसी कार्य की निष्पत्ति में एक महत्वपूर्ण अंग हूँ –
5. अस्तित्व-बोध से मेरी धारा प्रवाहित होती है –
6. सापेक्षता ने मुझे जन्म दिया –
7. मेरा अर्थ है शाश्वत और परिवर्तन का समन्वय –
8. मानवता मेरा शृंगार है –
9. अणुव्रती जीवन का आदर्श है परिग्रह और मेरा अल्पीकरण –
10. मैं अपने आप में परिपूर्ण हूँ –
11. मेरी प्रतिरोधात्मक शक्ति का उपयोग करने वाला व्यक्ति ही सफल प्रतिरोधक हो सकता है –
12. एक मैं बचूंगी तो सब कुछ बचेगा –
13. अणुव्रत परिणाम से अधिक मेरी चिंता करता है –
14. विरोधी वातावरण में मैं अप्रतिहत नहीं हो सकती –
15. मेरा सही मानदंड चरित्र है –
16. अणुव्रत आंदोलन को रचनात्मक आंदोलन का रूप देने में मेरी अहम भूमिका रही है –
17. धर्म के क्षेत्र में भय और मेरा स्थान नहीं है –
18. मेरे साथ संघर्ष करने की पद्धति भी नैतिक होनी चाहिए –
19. मैं मनुष्य का सहज संस्कार हूँ –
20. विद्यार्थी जीवन में अणुव्रत की शिक्षा का अभ्यास हो जाए तो मेरी साधना दुष्कर नहीं रहती –

दृढ़निष्ठा
दीर्घकाल तक आसेवन
निरंतरता

मेरा नाम	पृ.सं.
आस्था	83
अर्थ	147
धर्म	209
प्रोत्साहन	143
चेतना	41
समाज	7
सत्य	52
मानव	222
आरंभ	10
अणुव्रत	59
अहिंसा	223
मानवता	179
प्रवृत्ति	66
गति	22
विकास	98
प्रेक्षाध्यान	69
प्रलोभन	119
अनैतिकता	133
दुर्बलता	142
संयम	178

242

प्रबोधन X

अन्त्याक्षरी

प्रत्येक उत्तर का अंतिम वर्ण आगामी उत्तर का प्रथम वर्ण होना चाहिए।

		पृ.सं.
1.	........पुरिसा........! तुमंसि नाम सच्चेव जं हंतव्वं ति मन्नसि।	179
2.	अणुव्रत-आंदोलन संयम की न्यूनतम........साधना........का आंदोलन है।	15
3.	मैं सेवाभाव से रहित स्वार्थ व........नाम........की भावना से पद ग्रहण नहीं करूंगा।	55
4.	विश्व में मनुष्य सबसे अधिक........मननशील........प्राणी है।	147
5.	लोकन में एक........लहतान........आनबड़गी ।।	49
6.	निश्चय........नय........वास्तविक है किंतु व्यवहार नय को नकारने से कभी-कभी उसकी वास्तविकता भी विवादास्पद बन जाती है।	48
7.	अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह को सांख्य योग में........यम........कहा जाता है।	13
8.	एक बार........मगध........जनपद में दुष्काल पड़ा।	127
9.	यस्य........धर्मविहीनानि........दिनान्यायांति यांति च।	209
10.	अणुव्रत भी एक ऐसा ही अभिक्रम है जो मनुष्य के मानसिक असंतुलन का........नियंता........है।	164
11.	विज्ञान में........तारक........और मारक दोनों शक्तियां होती हैं।	180
12.	छुआछूत समाज के लिए........कलंक........है।	138

पृ.सं.

13. सडकां राजस्थान री, केड़ी वणी.......कमाल.......। 137

14. आचार्यजी! धर्म के प्रति मेरा बहुत.......लगाव.......है, पर मैं धर्म नहीं कर सकती। 124

15. राम और भरत का सह-अस्तित्व कैकयी स्वीकार कर लेती तो राम के.......वनवास.......का प्रसंग उपस्थित नहीं होता। 175

16. ....समाज.......और राष्ट्र-सुधार का मूल व्यक्ति-सुधार है। 144

17. रूपांतरण के लिए हृदय से.......जप.......करना होगा। 97

18. आचार्य तुलसी के अनुसार काव्य की भाषा में प्रेस प्रतिनिधि–.......पवनदूत.......। 226

19. एक मानसिक बीमारी–.......तनाव.......। 207

20. अणुव्रत का दर्शन.......वर्तमान.......की स्वस्थता पर आधारित है। 176

21. ....नर.......हो नारी बने नीतिमय जीवनचर्या सारी। 104

22. विवशता में जो हिंसा करता है, उसका हिंसा में.......रस.......नहीं होता। 105

23. व्रती जीवन जहां आत्मशांति पैदा करता है, वहां वह आर्थिक समस्या का भी.......समाधान.......देता है। 14

24. महारंभ और महापरिग्रह.......नरक....... के कारण हैं। 11

25. समाज के लोग हर नई.......करवट.......के सामने एक प्रश्नचिह्न खड़ा कर देते। 24